REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

विषय हिंदी हिदूंस्तान की पहचान है

डॉ . एम. ए. येल्लूरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध - निर्देशक
हिंदी विभाग प्रमुख , बी.एस.एस.कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, माकणी. तह.लोहारा जि. उस्मानाबाद.

हिंदी, हिन्दुस्तान की संस्कृति की वाणी, संस्कृत की मुख्य उत्तराधिकारीणी और देश में सर्वाधिक बोली तथा समझी जानेवाली भाषा के रुप में स्वयंमेव सदियों से राष्ट्र भाषा का पहचान बनाया है . इसकी सरलता, सुबोधता,ग्रहण - शक्ति, सभी विषयों में अभिव्यक्त करने की क्षमता वैज्ञानिक लिपि , व्यापकता के आधार पर हि संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को संघ की राजभाषा घोषित कर दिया था.

आज हिंदी हमारे देश की संपर्क भाषा है, राष्ट्रभाषा है एवं राजशाषा है. जहाँ तक उसके संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा की बात है वह सर्वस्वीकृत है. केवल राजभाषा को लेकर कुछ समस्याएँ है. उसका कारण है कि देशका शासन चलानेवाला अधिकारी वर्ग अभितक हिंदी में काम करने में पूर्ण सक्षम नहीं हो पाया है. जिस दिन वह सक्षम हो जाएगा अपने आप वह समस्या भी हल हो जाएगी और हमारा पूरादेश सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवे प्रशासकीय स्तरपर एकताके सुत्र में बंधकर हिंदी के माध्यम से एक राष्ट्र के रुप में अपनी सशक्त पहचान स्थापित करेगा. इतनाही नहीं तो भाषा मानवीय संस्कृती की सबसे मूल्यवान उपलब्धि हैं. यह मनन, चितन, और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है. भाषा का संबंध सीधी दृष्य से होता है . वह मिटट्री से जूडी हुई तथा आसपास कि वातावरण में घुली मिली होती है. भाषा ही समस्त ज्ञ ाान की प्रकाशक और संवादहोने के कारण संस्कृति की मूलाधार और गतिशील उत्प्रेरक है भाषायी विकास व सांस्कृतिक विकास साथ - साथ चलते हैं वे परस्पर एक दुसरे के सहास्यक और पुरक है.

भाषा मनुष्यकी व्यक्ति की पहचान बनाता है, भाषासे ही राष्ट्र की सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान होता है यह राष्ट्र की अस्मिता की पहचान एवं रक्षक, पालक और समृध्द बनानेवाली है.

कहाजाता है कि, भाषा राष्ट्र को स्वतंत्र पहचान दिलाती है . जैसे फ्रेंच भाषी फ्रांसीसी रशियन वाला रुसी, चीनी भाषावाली चीनी कहलाते हैं, वैसे ही हिंदी बोलने वाला हिदुस्तानी कहलायेगा.

हिंदी सदियों से संपूर्ण राष्ट्र के जन-जन के विचारों की अभिव्यक्ति की भाषा है, यह संपूर्ण राष्ट्र की एकता एवं प्रगती के संकल्प की भाषा है . यह किसी प्रान्त विशेष की भाषा न होकर संपूर्ण राष्ट्र में बोली समझी जानेवाली भाषा है. यह किसी जाति या समुदाय विशेष की भाषा न होकर सम्पूर्ण राष्ट्र की संपर्क भाषा है. यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और परंमपराओ को अभिव्यक्त करनेवाली मातृभाषा है.

हिंदी की प्रकृति उदार, सहिष्णु, गंभीर और सदाचारी एवं सदशयी रही है. इसकी ग्राहयशक्ति बहुत विशाल है, इसलिए इसमें आजतक अनेक भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करके राष्ट्रीय एकता को ज्यादा मजबूती से पेश किया है. हिंदी भारतीय भाषाओं के मध्य मणि के समान प्रकाशवान है.

भारतेंदु युगमें हिंदी साहित्य में गद्य की स्थापना की गयी. कई साहित्यकार व्यक्तिगत रुप से पर- घर जाकर हिंदी के प्रचार में लगेये.इनमें प्रमुखतया भारतेंदु हरिशचंद्र, सुधाकर व्दिवेदी, बालकृष्ण भटट, पंडित प्रताप नारायण मिश्र ये जिव्होंने अपनी पत्रकारिता के व्दारा भी हिंदी की निरंतर सेवा एवं साधना की. हिंदी का शब्द कोष विशाल एवं व्यापक है. हिंदी में अन्य भारतीय भाषाओं के साथ साथ विदेशी भाषाओं के शब्दो को भी आत्मसाथ करने की अद्भूत क्षमता है. हिंदी के विकास एवं उत्थान की असीम संभावनाए है. हिंदी विश्व की सबसे बडी भाषा है जिसके बोलनेवाले विश्व में लगभग ७० करोंड से भी अधिक लोग है. अत: हिंदी राष्ट्रभाषा ही नहीं विश्व की भाषा बनने के योग्य एवं समर्थ है . हिंदी की विपुल एवं समृध्द वाड्मय है. यह विश्वकी सबसे सरल, सरस, एवं सहज भाषा है जिसमें वैज्ञानिकता है . इसमें जैसा उच्चारण होता है . वैसाही

लिखा जा सकता है . हिंदी की देवनागरी लिपि ध्वन्यात्मक - विश्लेषण की दृष्टि से विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है. भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से भी हिंदी राष्ट्र भाषा ही नहीं वरन विश्व भाषा है. हिंदी को समझने वाले सम्पूर्ण विश्व में विस्तारित है. अनिवासी भारतीयों ने विश्व में हिंदी का वर्चस्व बनाने में महती भूमिका निभाई है. अत: संयुक्त राष्ट्र संघ को भी अविलम्ब हिंदी को मान्यता प्रदान करनी चाहिए ताकि हिंदी को वह समान मिले जिसकी वह आधि कारिणी है.

राष्ट्रभाषा व्दार मनुष्य एक समाज के रुप में संगठीत होते हैं, एक दुसरे को समझ सकते है. तथा मिलजूल कर काम कर सकते हैं, इसी से समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है, भाषा से राष्ट्रीय चेतना का निर्माण होता है, सृजनशीलता का भी इसका घनिष्ट सम्बन्ध है, इसलिये विजेता राष्ट्र के नागरीक गुलाम देशके साहित्य को नष्ट कर, उनकी जीवन शक्ति को जला देते हैं. उनमे उनकी भाषा व संस्कृति के प्रतिहीनता का भाव भर देते है, एवं उन्हे अपनी भाषा, संस्कृति के रंग में रंग कर मानसिक गुलाम बना देते है.

हिंदी मात्र हिन्दुओं की ही भाषा नही है. अमीर खुसरों, हिंदी के प्रारंभिक कवियों में से एक है, उन्होंने यह भी कहां है कि मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हु और हिंदी में उत्तर देता हैं. कबीर, जायसी, कुतूबन, मंझन, उस्मान, अब्दुल रहीम खानखाना , और रसखान ने अपना साहित्य इसी भाषा में रचित कर इसे समृध्द बनाया . इन लेखको कवियों ने यही सिध्द किया कि हिंदी हिदूं- मुस्लिम एकता का मार्ग और कोई नहीं, भारतकी राष्ट्रीयता का मार्ग है .

हिंदी की शरण में तो वे विदेशी पादरी तक गये, जो इस देश में अपना इसाई धर्म फैलाना चाहते थे, हिंदी का पहला व्याकरण लिखने का श्रेय जानके स्टोवर को है जो उच भाषी थे, बाद में उनकी पुस्तक का लैटिन भाषा में अनुवाद हुआ हिंदी के पठन-पाठन के लिए पहली पुस्तक हिंदी मैनुअल फोर्ट विलियम कॉलेज के श्री गिन क्राईष्ट ने 1882 में लिखी थी.

हिंदी, हिंदुस्तान की पहचान है कि बाबत् श्री फ्रेडरिक पीलकाट ने कहा एवं 1868 में ब्रिटिश सरकार से मांग रखी की इगलण्ड से आने वाला इंडियन सिविल सर्विस के अधिकारियों को अनिवार्य रुप से हिंदी सिखायें, जब अन्य भारत-प्रेमियों ने यही मांग का समर्थन किया तब इंडिया ऑफिस लन्दन के आदेश सं 975-81 दिनांक 12-8-1881 व्दारा आई. सी.एस अफसर के लिए हिंदी की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य कर दिया गया.

कलकत्ता से छपने वाले अंग्रेजी दैनिक स्टेटमेंट के दिनांक :०६ अप्रेल, १८६९ के अंक में प्रकाशित समचार के अनुसार इगल्ड की सम्राज्ञी विक्टोरिया का जब भारत भ्रमण का कार्यक्रम निश्चित हो गया, तब उन्होंने अपने लिये भारत के एक हिंदी शिक्षक बुलवाया था. महारानी विस्टोरिया जानती थी कि हिदुस्तानकी जनता के अन्दर मनमें झाकने के लिए हिंदी सिखना जरुरी है .

स्वामी दयानंद सरस्वती की मातृभाषा गुतराती थी वे, स्वयं संस्कृत के प्रकाण्ड विव्दान थे, उनका अध्ययन, लेखन, व्याख्यान शासन आदि में करते करते थे, उन्हे बंगला भाषी श्री केशव चंद्र सेन ने सलाह दि कि वे हिंदी अपनाये, जिस किसी को अपने विचार जन-जन तक पहूँचाने है. तो वह हिंदी सीखता है. स्वामीजी ने हिंदी को अपनाया व मन, वचन, कर्म से इसकी सेवा कार्य किया, जो कि हमेशा याद किया जायेगा.

सन्नो, फकीरों ने अपनी सरल भाषा में गीतों के माध्यम से देश को एकता के सुत्र में बांधाथा. उन्होंने कन्याकुमारी के पुनित जल से काश्मीर का अभिषेक किया, ब्रम्हपुत्र का जल व्दारकापुरी में चढाया. केरलके राजा स्वामी तिरुनाल ने हिंदी गीतों की रचना की थी . महात्रभु चैतन्य ने बंगाल , नामदेव ने महाराष्ट्र, संत नरसिंह मेहता ने गुजरात में, वल्लभाचार्य तेलगु, रामानुजाचार्य तमिल, नानक व गुरु गोविंद सिंह पंजाबी भाषाये, परंतु उन्होंने अपने भक्तिपूर्ण हिंदी कविताओं के माध्यमसे राष्ट्रीय एकता को पनपाचा , इसे सुदृढ किया.

मित्रों इस देश के अनेक भाषाओंके लेकखकों, कवियों, पत्रकारों ने हिंदी में अपने साहित्य की रचना की थी, इसमें बंगाल के क्षितिज मोहन सेन, रवीन्द्रनाथ टैगोर मन्मथनाथ गुप्ता, महाराष्ट्र के संत रामशेवडे, प्रभाकर माचवे, मुक्तिबोध गुजरात के कन्हैयालाल माणिक्य लाल मुंशी, तमिलनाडु के शंकर नायडु केरलके चंद्र हासन, पंजाब के यशपाल, और उपेंद्रनाथ अश्क प्रमुख है. आज उन्हें राष्ट्रीय लेखक के तौर पर सारे देश में जाना जाता है, इसके साहित्य ने एवं माखन लाल चतुर्वेदी, रामनरेशत्रिपाठी, निराला, बालकृष्ण शर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं ने राष्ट्रीय संस्कृतिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण योगदान त्रदान किया था

निष्कर्ष-

हिंदी प्रेम और सौहाद की भाषा है जिसने सखियों सहलियों की तरह अन्य भाषाओं को गले लगाया है . हिंदी ने शाश्वत मूलयों को खोजा है हिंदी अनेकता में एकता की भाषा है. हिंदी जहाँ ममतामयी है वहीं संतो की वाणी , ज्ञान विज्ञान एवं आध्यात्म से ओत-प्रोत है. आवश्यकत्ता है पूर्वाग्रह मुक्त होकार अपनानेकी अपने को समझाने का भी " निज भाषा उन्नति अहै " " सब उन्नति के मूल " येतो है पर हिंदी - हिदुस्तान की पहचान में चारचॉद लगाने वालो में राजनेताओं भी अपनी राष्ट्रीय छवी बनाने के लिए हिंदी की शरण में, स्वतंत्रता सेनाती योंने अपने आंदोलन काल में हिंदी का प्रचार-प्रसार किया व अधुनिक काल में श्री एच.डी देवेगौडा एवं श्रीमती सोनिया गांधी ने हिंदी भाषा सीख कर राष्ट्रीय छवि बनायी है देशकी मौलिक चेतना हिंदी में हि है यही हिंदी और इस राष्ट्रकी पहचान है.

संदर्भ ग्रंथ-

१. डॉ. आरसू - भारतीय भाषाओ के पुरस्कृत साहित्यकार.
२. डॉ. टी.वी देशपांडे - हिंदी भाषा तथा साहित्य शास्त्र
३. डॉ. भोलानाथ तिवारी - भाषा विज्ञान
४. डॉ. सुरेश माहेश्वरी- हिंदी राष्ट्रभाषा से विश्वभाषाकी ओर
५. हनुमानप्रसाद शुक्ल - हिंदी भाषा पहचान से प्रतिष्ठातक
६. डॉ. कामिनी - भाषाविज्ञान, आराधना ब्रदर्स, कानपुर- 1996
७. राधाकृष्णदास - भाषा संदर्भ और साहित्य.
८. डॉ. नगेद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास
९. डॉ. अंबादास देशमुख - भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा- आरती प्रकाशन औरंगाबाद.